

**फफोला** पुं. (तद्.) शरीर पर पड़ने वाला छाला, झलका, जलने या रगड़ आदि खाने से शरीर पर होने वाला उभार जिसके भीतर प्रायः पानी, मवाद या पीप भर जाता है।

**फफफुस** पुं. (तत्.) फुफस, फेफड़ा, फुफफुस।

**फबती** स्त्री. (देश.) 1. कटाक्षपूर्ण उक्ति, व्यंग्यात्मक बात या कथन, चुटीली बात, उपहासात्मक कथन, किसी पर परिहासपूर्ण बात, ठठोली, चुटकी, ताना 2. कभी-कभी चुभती हुई या अप्रिय बात।

**फबन** स्त्री. (देश.) फबने की अवस्था, भाव या क्रिया, शोभा, सुंदरता, छबि।

**फबना** अ.क्रि. (देश.) शोभा देना, सजना, अच्छा लगना, खिलना, भला मालूम होना, सोहना, सुंदर लगना।

**फबि** स्त्री. (देश.) शोभा, सुंदरता, छबि-फबन।

**फबिता** स्त्री. (देश.) शोभा।

**फबीला** वि. (देश.) शोभा देने वाला, सजने वाला, सुंदर, फबता हुआ, फबने वाला, शोभावर्धक, जो फबता या भला जान पड़ता हो।

**फमनीन युग** पुं. (अं+तत्.) ऐतिहासिक भूविज्ञान के अनुसार, मानव इतिहास से पहले की एक लंबी अवधि।

**फर** पुं. (तद्.) 1. वृक्ष आदि के फल, डोंडी 2. परिणाम, फल 3. बाण का अगला नोकिला भाग, फल, हल की नोक, फलक, ढाल 4. समतल 5. सामना, मुकाबला, रणभूमि, बिछौना, बिछावन 6. स्त्री. (देश.) पहले पानी सेंकी जाने के बाद घी, तेल में तली कचौड़ी आदि पुं. (अर.) 1. पशु-लोम, समूर, समूर वाले पशु 2. समूर सहित खाल 3. समूर के बने कपड़े 4. देवदार जाति के वृक्ष (शंकु जैसे और सुइयों जैसे फल)।

**फरक** पुं. (देश.) 1. स्फुरण, फड़कन, स्पंदन, फड़क, धड़कन, चंचलता, फरकने का भाव या क्रिया 2. पार्थक्य, अलगाव, दुराव, परायापन, बीच का

अंतर, दूरी 3. भेद, अंतर 4. कमी, कसर वि. तेज, तेज चलने वाला सुई का आगे का समय।

**फरकन** स्त्री. (देश.) 1. फड़कन, फड़कने की क्रिया या भाव, फड़फड़ाहट, धड़कन 2. उत्सुकता वि. (देश.) भड़कने वाला बैल या कोई पशु।

**फरकना** अ.क्रि. (देश.) 1. फड़कना, हिलना-डूलना, गतिहोना, फर-फर या फड़-फड़ की ध्वनि करना इस प्रकार हिलना या किसी अंग को हिलाना कि फर-फर (फड़-फड़) की ध्वनि हो 2. भय या विपत्ति के समय पक्षियों के पर जल्दी-जल्दी हिलना, फड़फड़ाना 3. अपने-आप बाहर आ जाना 4. उमड़ना, उड़ना, स्फुरण 5. आनंदित मन में प्रशंसा का भाव आना, भाव-विभोर होना, मुग्ध या प्रसन्न होना 6. उत्तेजित होना, जोश में आना।

**फरका** पुं. (तद्.) फलक, बँडेर पर रखा जाने वाला छप्पर, दरवाजे पर लगाया जाने वाला ठट्टर, झोपड़ियों के द्वार पर लगाए जाने वाला ठट्टर।

**फरकुला** स्त्री. (अं.) वक्षस्थल से ऊपर स्थित अस्थि विशेष का नाम।

**फरचा** वि. (देश.) जो जूठा न हो, साफ, शुद्ध, पवित्र।

**फरजंद** पुं. (फा.) बेटा, पुत्र।

**फरजी/फर्जी** पुं. (फा.) शतरंज के खेल का एक मोहरा, वजीर वि. (अर.) 1. जिसकी केवल कल्पना हो, मूलतः जिसका अस्तित्व न हो, काल्पनिक 2. अनुमान पर आधारित, कियासी 3. माना हुआ 4. प्रशा. कृत्रिम, बनावटी, दिखावटी, नकली स्त्री. (फा.) चोगा, अंगरखा, गाउन।

**फरजी बंद/फर्जी बंद** स.क्रि. (फा.) शतरंज के खेल में प्रतिपक्ष के वजीर का ऐसी स्थिति में आ जाना कि वह बच न पाए।

**फ़रद** पुं. (अर.) 1. अकेला, एकाकी व्यक्ति 2. अद्वितीय, बेमिसाल 3. रजाई, दुलाई, चादर